व्यक्तिगत स्पष्टीकरण के नाते अपनी बात कह सकूं ।

MR. DEPUTY-SPEAKER : We will consider that.

श्री जार्ज फरनेन्डीज (बम्बई दक्षिण) : अध्यक्ष महोदय, सम्प्रदायवाद पर जब भी बहस होती है उसमें एक किस्म का नकलीपन हमें हमेशा नजर आता है । गुस्सा-गुस्सी तो दोनों तरफ से 14 तारीख को यहां पर चला लेकिन उसमें भी कुछ नकलीपन था । कितनी गम्भीरता के साथ इस मामले पर हम लोग विचार कर रहे हैं उसका सबूत उसी दिन शाम को हम लोगों के सामने आया कि दो बार घंटी बजने के बाद भी इस सदन में 40-45 लोगों की हाजिरी नहीं हो पाई । इसी नकलीपन का एक और नमूना भिवंडी और जलगांव के दंगों के बाद हमें पढ़ने को मिला । इंदिरा कांग्रेस की कोई बैठक हो गई, उस बैठक की रिपोर्ट हम लोगों को पढ़ने के लिए मिली । उसमें यह कहा गया—शायद प्रधान मन्त्री के मुंह से निकली हुई बात या अन्य किसी व्यक्ति की :

"Riots in the Bhiwandi and Jalgaon should be an eyeopener to all of us."

कुछ समझ में नहीं आता जलगांव और भिवंडी के साम्प्रदायिक दंगे होने तक पिछले 22 सालों में जितने दंगे चलते रहे उनमें से किसी ने भी आपकी आंखें नहीं खोलीं अहमदाबाद में आपकी आंखें नहीं खुलीं, जबलपुर में, रांची में, देश के कोने कोने में हुए जातीय दंगों ने आप लोगों की आंखें नहीं खोलीं । हमेशा जब इस किस्म की परिस्थिति सामने आती है तब यह बात कही जाती है कि मामला बहुत गम्भीर है, बड़ी गम्भीरता के साथ सोचना चाहिए, 8-10 दिनों तक अखबारों में दंगाग्रस्त इलाकों की खबरें आती हैं, वहां भी एक-आध प्रश्न उठते है, बयानात होते हैं और फिर मामला खत्म हो जाता है । आगे कोई भी ठोस निर्णय लेने वाली बात पर हम कभी नहीं पहुंचे है । भिवंडी और जलगांव के मामलों पर जब यहां बहस होती है, मैं जानता हूं इस सदन के कई सदस्य वहां जाकर के देखकर आये हैं और वहां की हालत से काफी अवगत हैं लेकिन दो बातों पर इस बहस के दरमियान हम चाहेंगे कि कुछ सफाई से हम लोग कहें और सफाई से जिन पर विचार करें । पहले तो जो दंगे जलगांव और भिवंडी, दो शहरों और उसके आसपास के गांवों में हुए उसके बारे में । दूसरे इन दंगों के पीछे जो बुनियादी कारण हैं उनके बारे में भी कुछ गम्भीरता से हम लोग सोचें ।

17.03 hrs.

[Shri Shri Chand Goyal *in the Chair*]

जहां तक भिवंडी के दंगों का मामला है, उस दिन हमारे मित्र श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने बड़े गुस्से से यह कहा, वहां के दंगों का विवरण देते हुए, कि मुसनमानों की ओर से शर्त रखी गई थी कि जुलूस को कैसे निकाला जाये, जुलूस में क्या-क्या बोला जाये । मैं समझता हूं बाजपेयी जी को या तो गलत जानकारी हुई या फिर इस मामले में उनकी जानकारी अधूरी रही क्योंकि वहां के मुसलमानों की ओर से 18 अप्रैल को पीस कमेटी के सामने एक निवेदन देखने में आया, उस निवेदन में वहां के मुस्लिम समाज के नेताओं ने, जो बातें उनको कहनी थीं शिव जयन्ती के जुलूस के बारे में, वह बहुत विस्तार से पेश कीं । उसकी एक कापी मैं यहां ले आया हूं । सात पेज का उन का एक निवेदन है । जो बातें माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी ने कहीं कि शर्तें लगायी गयीं कि कैसे जुलूस निकलेगा, कौन झंडा लिया जायगा, ऐसी कोई बात नहीं थी । मैं उनके सुझावों को पढ़कर सुनाना चाहता हूं ।

"In view of the fact that usually trouble springs from certain aspects of the procession taken out on Shiv Jayanti, we suggest the following measures, so as to avoid any ugly incident :

(1) No gulal should be used.

[श्री जार्ज फरनेंडीज]

(2) No provocative and abusive slogans should be shouted.

(3) Being a national festival,"—

जिसमें वह भी हिस्सा लेने वाले थे ।

"the procession should have no *Bhagwa* flags.

(4) The route of the procession should be fixed in order to avoid potential trouble spots."

एक विनती थी, और एक सुझाव था । मैंने वहां के मुसलमान समाज के नेताओं से बातें कीं । मैंने पूछा कि क्यों गुलाल के बारे में आपने विरोध किया । तो उन्होंने कहा कि आज तक का हमारा अनुभव यह रहा है कि जब जुलूस निकलता है तो मस्जिद पर गुलाल फेंकने का प्लान बहुत बड़े पैमाने पर होता है ।

मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता । मैं चाहता हूं कि असलियत को जरा हम ठीक ढंग से समझें ।

दूसरी बात यह जो पूछी जाती है कि पहले पत्थर किसने मारा ? तो मैं नहीं समझता कि किसी भी सामप्रदायिक दंगे में कौन पहला पत्थर मारता है यह मतलब की बात नहीं होती है । क्योंकि जब जुलूस शुरू हुआ तो पुलिस कमिश्नर, डी० एस० पी० और कलेक्टर के रहते हुए कहा गया कि नारे नहीं लगाये जायेंगे, लेकिन नारे दिये गये । गिरफ्तारी हो गयी और पुलिस को आश्वासन देकर कि नारे नहीं लगायेंगे गिरफ्तार लोगों को छुड़ाकर बाहर निकाला गया और फिर वही नारे दिये गये । अगर जमीन से उठाकर मारने को ही पत्थर कहा जाता है, तो कैसे काम चलेगा । दोनों तरफ बहुत बड़े पैमाने पर तैयारी थी, मैं इस बात को छिपाना नहीं चाहता । भिवंडी में दोनों तरफ से तैयारी थी । लेकिन जलगांव के बारे में महाराष्ट्र टाइम्स के सम्पादक ने रिपोर्ट भेजी है ।

यह हकीकत है, इसको कोई नहीं छिपा सकता । और भिवंडी के दंगे के बाद जब जलगांव में एक तरफा आक्रमण, नुकसान और परेशानी होती है तो बात साफ होती है कि तैयारी एक अर्से से रही । सोडा वाटर की बोतलें कहीं भी मिल सकती हैं लेकिन बम और पोलोटोव काकटेल भी वहां पर पकड़ी गयीं और उनका बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया ।

दंगे के पहले जो भाषण हुए थे, मुसलमानों ने निवेदन किया था, जिसका पहला वाक्य है ।

"Bhiwandi has a glorious tradition of communal peace and harmony which has come down from centuries together."

आगे उन्होंने विस्तार में कहा है कि कैसे दोनों कोमों में रिश्ते रहें । लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी जी से प्रार्थना है कि डा० व्यास की जो तकरीरें हो गई, उनके बारे में जानकारी दें । डा० व्यास जनसंघ के भिवांडी शाखा के अध्यक्ष हैं । डा० व्यास ने कई तकरीरों में कहा है कि यह जो कहता है कि भिवांडी में कभी जातीय दंगे नहीं हुए, वह बेवकूफ है, उसको कुछ मालूम नहीं है 174 वर्ष पहले 1896 में इस शहर में दंगे हुए हैं । कौन सा वह बेवकूफ है जो कहता है कि यहां पर दंगे नहीं हुए । महाराष्ट्र सरकार से पूछिये, भिवांडी के व्यक्तियों से पूछिये तो आपको जवाब मिलेगा कि इस किस्म के भाषण वहां पर हुए । डा० व्यास के अलावा प्रोफेसर रमेश और संतोष के भी देखें कि क्या-क्या बातें नहीं कही गई ।

इसलिए पहले पत्थर वाले मामले पर हम लोगों को न जाते हुए इन चीजों को जिस ढंग से, जिन बातों से, जिस व्यवहार से, जिस पार्श्वभूमि से पकाया जाता है उनमें हम लोगों को जाना चाहिए । इसलिए अध्यक्ष महोदय बुनियादी प्रश्न पर हम आते हैं कि क्यों इस किस्म की हालत बनती है । तमाम राजनीतिक दल इसके लिए जिम्मेदार हैं । प्रधान मन्त्री ने उस दिन बहुत गुस्से में आकर अटल बिहारी वाजपेयी जी की बातों का खंडन किया । क्या प्रधान मन्त्री इससे मुक्त हैं ? मैं आपको याद

दिलाऊं कि डा० लोहिया के चुनाव क्षेत्र में 1967 में जाकर श्रीमती गांधी ने उनके विरुद्ध क्या प्रचार किया था मुसलमानों के बीच में जाकर। डा० लोहिया के खिलाफ यह प्रचार किया था कि डा० लोहिया तुम्हारे पर्सनल ला को मिटाना चाहते हैं, इनको वोट नहीं देना पर्चे निकले और एकाएक ये बातें आज यहां पर कही जाती हैं। तो जातीयता दोनों तरफ से बढ़ती है। अध्यक्ष महोदय, सम्प्रदायवाद को एक तरफा चीज करके न लें, यह दोनों तरफ से चलता है। हिन्दू-सम्प्रदायवाद मुसलमान-सम्प्रदायवाद पर पलता है और उसी ढंग से मुसलमान-सम्प्रदायवाद हिन्दू-सम्प्रदायवाद पर पनपता है, उसी पर पलता है और विकसित हो जाता है। इसलिए आज तक देश में जिस किस्म की राजनीति को एक अरसे से हम लोगों ने हिन्दुस्तान में चलाया, उसके कारण आज हम सब लोगों ने अपनी जिम्मेदारी को उठाकर और आज तक की बिगड़ी हुई हालत को सुधारने का प्रयत्न करना पड़ेगा।

उस दिन यहां पाटिल साहब ने बहुत बड़ी बात कही। सब लोगों के दिल को अपील करने वाली बात कही। लेकिन पाटिल साहब जरा अन्तर्मुख होकर सोचें कि उन्होंने सन 1967 के चुनाव में इनकी सभा में यह कहा करते थे कि अगर उनको जिताकर आप भेजोगे तो डा० जाकिर हुसैन को राष्ट्रपति बनाया जाएगा। सवा लाख मुसलमानों के वोटर वहां हैं। मैंने उसका हमेशा जवाब दिया था, अध्यक्ष महोदय, कि डा० जाकिर हुसैन को आप राष्ट्रपति बना देंगे लेकिन हमारा जो अब्दुल रहमान फेरी वाला है वह तो फुटपाथ पर ही सोयेगा। डा० जाकिर हुसैन तो राष्ट्रपति बनकर 1200 एकड़ बगीचे में साढ़े तीन सौ कमरे के राष्ट्रपति भवन में पहुँच जाएंगे, लेकिन यह जो तरीका है चुनाव में और सार्वजनिक कामों में इस तरह का सिलसिला जो है, जब तक इस पर रोक लगाने का कोई ठोस फैसला हम लोग नहीं करेंगे, तब तक यह काम, गुस्से से, नहीं होगा। प्रधान मन्त्री ने बम्बई में, भिवांडी में और जलगांव में और यहां भी पत्रकारों से कहा कि 'वी शैल फाइट'। बड़े गुस्से में आकर कहा 'वी शैल फाइट'। हम देख रहे हैं 20 साल से आपकी फाइट। तीन करोड़ मुसलमानों के वोट और उनको मद्देनजर रखकर आपने कदम बढ़ाये, क्या कदम उठायेंगे आप? उनकी वोटों को मद्देनजर रखकर आपने कदम बढ़ाये, उसके सिवाय आपने कोई काम नहीं किया और आज भी अगर सिर्फ वोटों को मद्देनजर रखकर आप 3 करोड़ वोटरों से एक नम्बर की सीट पर बैठकर अपील करने का काम करोगे तो उससे हिन्दुस्तान में सम्प्रदायवाद को मिटाने का काम नहीं हो जाएगा। ऐसे आप कोई मंच बनाकर सैकुलर फौरम बनायें, इनके मार्फत बयानात देकर क्योंकि सत्ता आपके हाथ में है, आप काम नहीं चला सकते। भिवांडी में बसंत राव नाइक ने क्या कहा। भिवांडी में दंगे शुरू होने से पहले वह एक बार नहीं दस बार लोगों से जाकर मिले। मुख्य मन्त्री और गृह मन्त्री ने क्या किया? कुछ करने की बात रहने दीजिये, 7 तारीख के पहले, हमें श्री चव्हाण बतलायें कि क्या यह सही नहीं है कि 7 तारीख से 10 तारीख तक जब बम्बई से 30 किलो मीटर दूरी पर दंगा होता है तब चूंकि आप वहां पहुंच गये इस लिये महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री और गृह मंत्री वहां आप के साथ चले गये वर्ना उन के वहां जाने की बात नहीं थी?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI Y. B. CHAVAN): He came a day before.

श्री जार्ज फरनेन्डीज: वहां की विधान सभा में जब बहस हुई इस मामले पर तब भी उन का क्या व्यवहार रहा? 10 तारीख को थाना में दंगा होने के पहले मैं खुद थाना शहर में था। भिवण्डी शहर की परिस्थिति देख कर मैं थाना पहुँचा था। मैं अपने एक मित्र के घर में रहा। जब वहां पहुँचा तो एक मुसलमान

[श्री जार्ज फरनेंडीज]

दौड़ कर आया और बोला कि एक, पति-पत्नी को अभी-अभी एक मोहल्ले में लाठी से मार कर खत्म किया गया है। दूसरे दिन अखबारों में यह खबरें आ गई। यह 10 तारीख की शाम के साढ़े 6 बजे का किस्सा है।

मैं ने वसन्तराव नायक को फोन किया। वह घर पर थे, मैं ने अपना नाम बतलाया। वह मेरे दोस्त हैं। वह घर पर थे, लेकिन फोन उठाने से इंकार किया। मैं ने पूछा कि कहां मिलेंगे? बोले कि हमें नहीं मालूम कहां मिलेंगे। मैं ने पूछा कब मिलेंगे, तो कहा कि रात में देर से मिलेंगे। मैं ने कहा कि थाना में गड़बड़ी शुरू हो गई है, दंगा शुरू हो गया है, पुलिस का बन्दोबस्त अधूरा है, मैं किस के पास जाऊं? लेकिन वसन्तराव नायक, मुख्य मन्त्री व गृह मन्त्री से मिल नहीं पाया। किसी से भी मिल नहीं पाया। उस दिन से थाना में गड़बड़ी शुरू हो गई और 25 लोगों की मौत थाना शहर में हुई। यह हकीकत है।

इसलिये मैं उस दिन से कह रहा हूं कि बसन्तराव नायक का त्याग-पत्र लिया जाये। मैं जानता हूँ कि चव्हाण साहब अब भी महाराष्ट्र के नेता हैं; उन के दल के मुख्य मन्त्री बने हुए वहां बैठे हैं, लेकिन वह इस को कोई पार्टी का मामला न बनायें। उस दिन जो प्रधान मन्त्री ने कहा था, विशेषकर श्री अटल बिहारी वाजपेयी को जवाब देते हुए, कि बी शेल फाइट, अगर सही मानों में उस में कोई तथ्य है, कोई दम है, तो जरूर आप इस बात को कहें कि वसन्तराव नायक को हट जाना चाहिये। अगर सब से पहले उस भिवण्डी, जलगांव और महाराष्ट्र के हत्याकाण्ड के लिए सब से बड़ा दोषी कोई है तो वह है वसन्तराव नायक। महाराष्ट्र के मुख्य मन्त्री और गृह मन्त्री को एक क्षण के लिये भी उस जगह पर बैठने का कोई अधिकार नहीं है। उन्हें हटाने उस के बाद जो आप परसों सभी लोगों को बुला रहे हैं तो बनाइये योजना, सिर्फ आवाज नहीं, घोषणा नहीं, बनाइये योजना, जिस ठोस कार्यक्रम की मार्फत हिन्दुस्तान से सम्प्रदायवाद को खत्म करने की बात हो, नारेबाजी से नहीं, ठोस कार्यक्रम से। आप का यह मामला चलते-चलते, भिवण्डी की और जलगांव की हत्यायें चलते-चलते 10 तारीख को पूना में उस के निषेध के लिये एक सभा बुलाई गई। उस सभा में क्या कहा गया यह मैं चव्हाण साहब के सामने मराठी में पढ़ूंगा क्योंकि हिन्दी में पढ़ने में मुझे शर्म आयेगी। महाराष्ट्र के अखबारों में उस को छापा गया। उस में कहा गया था कि :

यह शिव सेना के नेता का भाषण है, इस का ट्रांस्लेशन श्री चव्हाण करवा लेंगे क्योंकि उन के पास समय बहुत है :

यह भाषण होता है। अखबार इस को छापते हैं। यह 10 तारीख का किस्सा है। यहां प्रधान मन्त्री बोलती हैं : बी शेल फाइट। फाइट व्हाट? फाइट हाऊ? तब आंख खुलने की बात क्यों? हर जातीय दंगा होने के बाद आंख खुलने की बात बन्द कीजिये!

इस परिस्थिति में कौम को सुधारने के लिए ठोस योजना ले कर आप सदन के सामने और, देश के सामने आएं। यह दो कौमों का झगड़ा नहीं है। यह देश को मिटाने वाला और देश को खत्म करने वाला मामला बनता जा रहा है। खुदा के नाम पर झगड़ा किया जाता है, एक दूसरे को कत्ल किया जाता है। जिन का खुदा में विश्वास है, वे खुदा के वास्ते इसको खत्म करें। यह मेरी आप सभी लोगों से प्रार्थना है।

MR. CHAIRMAN : I have to inform the House that the Home Minister will reply to the Debate at 6 O'clock.

Before that, Shri Atal Bihari Vajpayee will make his submission. Now, I request